त्याग को नमन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान संस्कृति है। त्याग भावना के कारण भारत को विश्व गुरू कहा जाता है। त्याग का अर्थ है—छोड़ना। अच्छाई को धारण करना और बुराई को छोड़ना त्याग है। त्याग की भावना जीवन को पवित्र बनाती है। हमारे देश के साधु संन्यासी त्यागी होते हैं। बड़े—बड़े नेता, अभिनेता उन्हें नमन करते हैं। त्याग का सम्मान सर्वत्र होता है। भगवान राम की महिमा का गुणगान उनकी त्यागवृत्ति के कारण है। उन्होंने अयोध्या जैसे राज्य को एक झटके में त्यागकर वन गमन स्वीकार कर लिया। उन्होंने मर्यादा का ऐसा पुल बांधा है जिसे लांघना असम्भव है। इसीलिए वे मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाते हैं। हमारे देश में त्याग की पूजा होती है, भोग की नहीं।

अर्जन का अर्थ है एकत्रित करना, इकट्ठा करना और संचित करना। विसर्जन का अर्थ है छोड़ना, त्यागना और हटा देना। किसका अर्जन करें और किसका विसर्जन करें यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। अर्जन और विसर्जन में संतुलन करने से व्यक्ति पूर्ण बनता है। अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है।

सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आ जाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आ जाना, सुनामी आ जाना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है। मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे है उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है। जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दुभर हो जायेगा।

जीवन में संयम आवश्यक है। व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। व्यक्ति के सुधार से समाज और राष्ट्र का सुधार होता है। यह विचार इस बात पर जोर देता है कि व्यक्ति का सुधार आवश्यक है। जीवन में अर्जन आवश्यक है। परिवार चलाने के लिए बच्चों की शिक्षा दीक्षा के लिए, व्यवहार चलाने के लिए अर्जन आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा और शिक्षा की सुविधा होनी चाहिए। इसके लिए मानव को कोई न कोई कार्य अवश्य करना पड़ता है। कार्य के द्वारा मनुष्य अर्जन करता है और अपनी आजीविका का निर्वाह करता है। संसार में कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो अतिसंचय करते हैं। अतिसंचय से दूसरे का हक छीना जाता है। इसलिए अतिसंचय नहीं करना चाहिए।

भारतीय जनमानस की सभी परम्पराएं यह स्वीकार करती है की यह सृष्टि अनेक तत्वों से बनी हुई है, उसमें अर्जन और विसर्जन दोनों तत्व समान रूप से कार्य कर रहे है। सृष्टि का जो स्वरूप हमारे सामने है वह स्थल और जल दो रूपों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रहा है। भारतीय दार्शनिकों ने इसपर सूक्ष्म विवेचन किया है और यह मत प्रतिपादित किया है कि इस सृष्टि में पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये मूल रूप से पांच तत्व हैं जो कुछ भी प्रत्यक्ष हो रहा है वह सब इन्ही के संयोग से है। षड्जीवनिकाय का संरक्षण पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है।

प्राचीनकाल में पर्यावरण शुद्धि के लिए प्रकृति की पूजा की जाती थी। उस समय प्रकृति और मानव के बीच में संतुलन बना हुआ था। किन्तु आजकल प्रकृति का अंधाधुध दोहन पर्यावरण में असंतुलन पैदा कर दिया है। जिसका परिणाम है अतिवृष्टि और अनावृष्टि, उष्मा और ताप का बढ़ना और घटना, वैश्विक परिदृश्य में ताप का बढ़ना और घातक बीमारियों का होना। यदि समय रहते मानव सावधान न हुआ तो इसका परिणाम उसे अवश्य भुगतना होगा। शास्त्रों की विधि को जीवन में उतारकर और निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करते हुए ही पर्यावरण की सुरक्षा की जा सकती है। इसके लिए मानव प्रकृति से जितना अधिक ग्रहण करे उससे अधिक देने का प्रयास करे तो संतुलन बना रह सकता है। पर्यावरण और आचार का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

हमारे चारों ओर जो कुछ भी है वह सब पर्यावरण का सहायक तत्त्व है। जीवन का अस्तित्व प्राकृतिक तत्त्वों के संतुलन पर टिका है, अर्जन और विसर्जन पर टिका है। जिस वातावरण से पृथ्वी घिरी है उस वातावरण में प्रत्येक तत्त्व एक अनुपात में है। यदि इस अनुपात में एक सीमा से अधिक अन्तर पड़ जाये तो जीवन समाप्त भी हो सकता है। जीवन की सुरक्षा के लिये केवल इतना समझना आवश्यक नहीं है कि प्रकृति हमारे लिये उपयोगी है, समझना यह है कि हम प्रकृति के एक अवयव हैं। जिस प्रकार हममें जीवन है उसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक कण–कण में जीवन है। मानव प्रकृति की उपेक्षा करके अपने अस्तित्त्व को नहीं बचा सकता। यदि उसे अपने अस्तित्त्व की रक्षा करना है तो जीवन के हर उपादानों पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तक को सुरक्षित रखना होगा। इन पांचों तत्त्वों की सुरक्षा और संरक्षा मनुष्य पर निर्भर है।